भारतीय कैलेंडर आर्ट में भारतमाता की महिमा का गुणगान

डॉ0 कविता सिंह

सहायक प्रोफ़ेसर (स्टेज–III), सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला

सारांश

इस शोध–पत्र में भारतीय कैलेंडर आर्ट में दर्शाई गई भारतमाता की छवि से सम्बंधित कलात्मक, राजनीतिक, सामाजिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में देश–भक्ति से ओत–प्रोत भावना को जन–जन तक पहुँचाने के भरपूर प्रयास का विश्लेषणात्मक अध्ययन है जो इस पॉपुलर कला दीर्घा की सूक्ष्म व अनमोल गहराईयों को छू कर उभरता है जिसमें भारत के महान कलाकारों, कलात्मक परंपराओं व सामाजिक मान्यताओं का पूर्ण दर्शन है कि किस प्रकार धीरे–धीरे इस कला के द्वारा भारत की आज़ादी की लहर को एक रोचक तथा कलात्मक ढंग से दिषा मिली। भारतीय कैलेंडर आर्ट को हम 'पॉपुलर प्रिंट आर्ट' के नाम से भी जानते हैं। भारतीय कैलेंडर आर्ट का प्रचलन 19 वीं सदी में भारत में प्रिंटिंग– मशीन के आगमन से आरंभ हुआ। पिछली सदी से इन भारतीय कैलेंडर आर्ट चित्रों के विशेष विषय भारतीय कला व संस्कृति का प्रतिबिंब बनकर प्रचलित हुए हैं। बहुत से मुख्य कलाकारों ने इन कैलेंडर चित्रों द्वारा भारत की आज़ादी के संघर्श का प्रचार–संचार बखूबी से किया था। देशप्रेम से ओत–प्रोत अनेक ऐसे कैलेंडर चित्र बनाकर छपवाये गए जिन में भारतमाता का गौरवषाली चित्रण है और देश के वीरों तथा स्वतंत्रता सेनानियों की बेमिसाल कुरबानियों व त्याग का दिल छूने वाला विवरण भी है जो हर भारतीय को देश–भक्ति की तीव्र भावनाओं से भर देता है।

मुख्य बिंदू:– *पॉपुलर प्रिंट आर्ट, लिथोग्राफिक प्रिंटिंग, सिंधु–घाटी सभ्यता, देवी दुर्गा, बंगामाता, अंबीन्द्रनाथ टैगोर, राजा रवि वर्मा, महात्मा गांधी, मदर इंड़िया।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ0 कविता सिंह,

''भारतीय कैलेंडर आर्ट में भारतमाता की महिमा का गुणगान'

शोध मंथन,

सितम्बर 2017,

पेज सं0 30–36

http://anubooks.com/?page_id=581

Artcile No. 6 (SM 444)

प्रस्तावना

भारतीय कैलेंडर आर्ट अथवा भारतीय पॉपुलर आर्ट की सरल व स्पष्ट परिभाषा समझते हुए हमारा ध्यान उस लोकप्रिय कला की ओर जाता है जिसकी मूलरूप कलाकृतियों की बहुतात में प्रतिकृतियाँ छपकर आम लोगों के घरों की दीवारों को सुशोभित करती हों और जिनमें जन–मानस की धार्मिक, सामजिक, आध्यात्मिक आस्थाओं, परंपराओं और देश –भक्ति की भावनाओं की सजीव अभिव्यक्ति हो। इस कला विधि को हम **'पॉपुलर प्रिंट आर्ट'** के नाम से भी जानते हैं।[1] भारतीय कैलेंडर आर्ट का प्रचलन 19 वीं सदी में भारत में प्रिंटिंग– मशीन के आगमन से आरंभ हुआ। विख्यात चित्रकार राजा रवि वर्मा ने 1894 में प्रथमतः यूरोप से **'लिथोग्राफिक प्रिंटिंग प्रेस'** मंगवाकर घाटकोपर, मुंबई में स्थापित की तथा अपने अमूल्य मूलरूप तैल्य–चित्र जिनमें उन्होंने हिन्दू देवी, देवताओं और उनके जीवन प्रसंगों को कैनवास पर यूरोपीय शैली व तकनीक द्वारा चित्रित किया था की बड़ी संस्था में बहुरंगी लिथोग्राफिक प्रतिकृतियाँ कागज़ पर कैलेंडर रूप में छपवाई। शायद यह ही भारतीय कैलेंडर आर्ट के नए युग की शुरूआत थी।[2](1)

जिन कला–विशेषज्ञों ने अपना पूर्ण ध्यान इस कला विधि की बारीकियों को समझने पर केंद्रित किया है वह एक नई अंतदृष्टि के साथ उभरे हैं उन्होंने इस कला के विषय–वर्णन, सजावटी तत्व व तकनीक और शैली की सूक्ष्म गहराईयों को छूने का प्रयास किया है। भारत की अनेक लोकप्रिय कलाओं में से इस कला–विधा ने अपना अनूठा स्थान भारतीय जन–मानस के मन–मस्तिष्क के पटल पर स्थापित कर लिया है और आज हम आम व खास वर्ग के घरों में इन बेहद खूबसूरत व दिलकश कैलेंडर चित्रों की प्रतिकृतियों को सम्मानपूर्वक सजा हुआ पाते हैं। यहाँ तक की इन कैलेडरों को सुन्दर फ्रेमों में सजावट लोग अपने पूजा स्थलों में बड़े प्रेम व श्रद्धा से सुशोभित कर पूजते हैं।

पिछली सदी से इन भारतीय कैलेंडर आर्ट चित्रों के विशेष विषय भारतीय कला व संस्कृति का प्रतिबिंब बनकर प्रचलित हुए हैं। बहुत से मुख्य कलाकारों ने इन कैलेंडर चित्रों द्वारा भारत की आज़ादी के संघर्श का प्रचार–संचार बखूबी से किया था। देशप्रेम से ओत–प्रोत अनेक ऐसे कैलेंडर चित्र बनाकर छपवाये गए जिन में भारतमाता का गौरवशाली चित्रण है और देश के वीरों तथा स्वतंत्रता सेनानियों की बेमिसाल कुरबानियों व त्याग का दिल छूने वाला विवरण भी है जो हर भारतीय को देश–भक्ति की तीव्र भावनाओं से भर देता है। **(2)** ब्रिटिश सरकार के निर्दयी व दुष्टतापूर्ण व्यवहार तथा असहनीय जुल्मों के चलते आज़ादी का संदेश जन–जन तक पहुँचाना एक कठीन कार्य था। महान कलाकारों ने अपने सुन्दर व भावनात्मक कैलेंडरों के माध्यम से इस महान कार्य का बीड़ा उठाया।

आज़ादी से भी पहले कई सदियों से सिंधु–घाटी की सभ्यता से ही भारतमाता की प्रतिमा की अवधारणा भारतीयों की अंतरआत्मा, सोच और चिंतन में समाई हुई है क्योंकि देवी माँ की मान्यता का वर्णन उस काल में बनाई गई कई कला व शिल्पकृतियों में दर्शाया जाता रहा है।**(3)**

इसी प्रकार देवी दुर्गा की पौराणिक अभिव्यक्तियाँ जो कि अपने साधकों की रक्षा करती हैं और जानवरों व मानव रूपों में व्यक्त होने वाले क्रूर और खूंखार दिखने वाले राक्षसों व दानवों का विनाश करती है बहुत रोचक तथा विस्तार रूप में चित्रित की जाती रही हैं। **(4)** पुरातन चित्रों की बात करें तो इनमें भारतमाता की छवि में चार भुजाओं वाली देवी का रूप अक्सर दर्शाया जाता रहा है जिसको मूलतः **'बंगामाता'** माना जाता है जो परचंड रूप से भारत का आत्मसम्मान, स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्भरता के चिन्हों से लैस होकर स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए तैयार दिखाई जाती हैं। **(5)** यह चार प्रमुख चिन्हः चावल का गुच्छा, एक पुस्तक, सुमिरनी और कपड़ा जिनका तात्पर्य है कि हर एक व्यक्ति को भोजन, ज्ञान, धर्म व तन ढकने के लिए वस्त्र समान रूप से उपलब्ध हों। एक रोचक अध्ययन के अनुसार, अबीन्द्रनाथ टैगोर ने 1905 में पहली बार भारत की छवि के नए अवतार में **'देवी भारतमाता'** व **'मदर इंडिया'** का नया स्वरूप सबके सन्मुख रखा।[3] **(6)** इसी प्रकार प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा ने भी अपने चित्रों में भारतमाता की वैचारिक छवि में लाल साड़ी पहने एक देवी को प्रभामंडल में से प्रगट होते हुए दिखाया है जिसके हाथों में देवी दुर्गा के शस्त्र व ब्रिटानिया के चिन्ह उकेरे हैं जैसे कि एक अंकुड़ा, जाल, एक तीर व विजय का अपुष्प–पर्ण सुशोभित है। **(7)** उनके चरणों में दो शक्तिशाली अफ़्रीकी षेर जो कि देवी के दिव्य वाहन माने जाते हैं दिखाए गए है।[4] यह षायद भारतमाता का संकर प्रतिमाचित्रण है जिसमें भावनात्मक राष्ट्रवादी बदलाव का आरंभ हुआ और अपनी भारतीयता पर गर्व और इस संकल्प की उत्पत्ति हुई कि अब हमने उत्पीड़कों को भारत भूमि से हर हालत में निष्कासित करना ही है।

जैसे कि भारत की स्वतंत्रता को टूटे वादों और गोल–मेज़ सम्मेलनों के माध्यम से बार–बार टाला जा रहा था, कुछ कैलेंडर चित्रों में भारतमाता को जंजीरों में जकड़े हुए राष्ट्रीय ध्वज व कांग्रेस आंदोलन के बैनरों को थामे दिखाया गया है। **(8)** कुछ टूटी हुई ज़जीरे भारतमाता की भुजाओं पर लिपटी हुई की थी रचना की गई है। षुरूआत में इस लोकप्रिय कला विधि ने जिसमें जन–जन तक संदेश पहुँचाने की अपार श्रमता है भारतमाता की छवि के ज़रिए स्वतंत्रता संग्राम में तीव्रता लाने का महान कार्य किया क्योंकि धार्मिक भावनओं से दूरगामी प्रभाव आसानी से फैलाया जा सकता है।

अनेको–अनेक राजनीतिज्ञ और नेतागण जो भारत की स्वतंत्रता के संघर्श में झूज रहे थे उनमें से कुछ गिने–चुने नेताओं को ही इन कैलेंडर चित्रों में विशिष्ट स्थान दिया गया है। इन में से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधियों में से **'महात्मा गांधी'** का नाम सबसे प्रमुख माना गया जिनका चित्रण इन राष्ट्रवादी कैलेंडर चित्रों में किया गया क्योंकि महात्मा गांधी ही ऐसी स्वस्थ राजनीति व नैतिकता के प्रतीक थे जिन्हें हर भारतीय का विश्वास प्राप्त था और उनमें ही धार्मिक व विचारिक पवित्रता के असीम गुण थे। **(9)** गांधी जी का सरल, सादा व उच्च विचारों से भरपूर जीवन सबके लिए एक प्रेरणा–स्त्रोत था। वह आम जन–मानस की तरह ही सादे खादी वस्त्र पहनते थे तथा सच्चाई की राह पर चलने के लिए अड़िग रहते थे। महात्मा

गांधी जी गांव–वासियों की तरह ही लंबी छड़ी पकड़ गांव–गांव पैदल यात्रा करते व उन गरीब व असहाय नर–नारीयों को स्वंय जाकर मिलते और उनकी कठिनाइयों का अध्ययन व समाधान करते। अहिंसा के पुजारी गांधी जी को जब भी कैलेंडर चित्रों में चित्रित किया गया तो कोई भी शस्त्र तथा खुंखार जानवर इत्यादि की आकृति साथ में नहीं बनाई गई। इसी समय के दौरान कुछ कैलेंडर ऐसे भी बनाए गए जिनमें भारतमाता के चरणों में झुके हुए **'नेताजी सुभाषचंद्र बोस'** को अपना हाथ उठाए भारतमाता से शस्त्र ग्रहण करते हुए दिखाया गया है। **(10)**

इसी भाँती कई कैलेंडरों में महान योद्धा **'षिवाजी मराठा'** को भारतमाता से आशीर्वाद लेते हुए स्वतंत्रता संग्राम का आंरभ करने की अनुमति लेते दर्षाया गया है। कुछ विचारोत्तेजक भारतीय कैलेंडरों में भारतमाता के वस्त्रों ने भारत की रूप–रेखा का अदभुत वर्णन है। उनकी केसरी, सफ़ेद व हरी साड़ी जो हमारे तिरंगे झण्ड़े के रंग हैं की गोद में भारत की स्वतंत्रता संग्राम के महान वीर सपूत व स्वतंत्रता सेनानी झूल रहे हैं। भारतमाता ही इन योद्धाओं की रक्षा करती है तथा करोड़ों भारतीयों का मार्ग–दर्शन भी करती हैं। इन कैलेंडर चित्रों में देष–भक्त **'न्यायाधीश रानाडे'**, **'बाल गंगाधर तिलक'** व भारतीय कांग्रेस के जन्मदाता **'ए. ओ. हयूम'** भी दिखाई देते हैं। जन–जन के प्रतिनिधि **'कस्तूरबा व महात्मा गांधी'**, **'जवाहर लाल नेहरू'**, **'चंद्रशेखर आज़ाद'**, **'सरोजिनी नायडू'**, **'रवीन्द्रनाथ टैगोर'** और **'अब्दुल गफ़ार खान'** लगभग हर कैलेंडर में देखे जा सकते हैं। **(11)** भारत की विविध संस्कृति व विचारधाराओं के चलते हुए किसी एक नेता को स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख चिन्ह बनाना एक कठिन कार्य था जोकि समूह भारत की राष्ट्रीय एकता का प्रतिनिधि हो। कुछ कठिनाइयाँ यह भी थीं कि भारत में विविध धर्मों के चलते तथा उनकी विभिन्न आस्थाओं के कारण किसी एक ऐसी छवि का पूजन करना लगभग असंभव था इसीलिए शायद भौगोलिक तौर से भारत की रूप–रेखा की पूजा का चित्रण किसी भी विवाद से मुक्त था। देवी माँ का चित्रण तब ही सबको स्वीकार हुआ जब उनकों तिरंगे रंग की साड़ी ओढे भारतमाता के रूप में प्रस्तुत किया गया।

कई विशेष जोशीले कैलेंडरों में स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री – श्री जवाहर लाल नेहरू को स्वतंत्रता संग्राम में प्राणाहुति देने वाले वीर सपूत जैसे कि **'भगत सिंह'**,**'राजगुरू'**, **'सुखदेव'**, **'चंद्रशेखर आज़ाद'** व **'लाला लाजपत राय'** के शीश भारतमाता को अर्पित करते हुए दिखाया गया है और इस प्रकार भारतमाता पंड़ित नेहरू को भारतीय संघ का ध्वज प्रदान करती हुई दिखाई गई हैं। भारतमाता के हाथों में आज़ादी से पूर्व बनाए गए कुछ पहले ध्वज भी देखें जा सकते हैं। इनमें एक ध्वज को **'मैडम कामा'** ने 1906 में स्टुटगर्ट, जर्मनी में फहराया था। **(12)**

सबसे मार्मिक व दिल की गहराईयों को छुने वाला कैलेंडर वह है जिसमें महात्मा गांधी को एक मृत मसीहे के रूप में भारतमाता की गोद में लेटे हुए चित्रित किया गया है जो एक महान कलाकृति **'द पाइटा'** जिसमें मदर मैरी की गोद में मृत ईसा को दर्शाया गया था से प्रेरित है जिसकी रचना महान इतालवी मूर्तिकार **'माइकल–ऐंजलो'** ने की थी। **(13)**

गांधी जी के सामाजिक व आर्थिक अभियानों में से **'स्वदेशी आंदोलन'** के विषय पर भी बेहद रोचक, भावनात्मक और उदारवादी कैलेंडरों का निर्माण हुआ जिनके कारण भारतीयों के दिल और दिमाग में एक नई उर्जा का संचार हुआ जिससे कई और सामाजिक कुरीतियों को नष्ट करने में सहायता मिली। यह स्वदेशी आंदोलन विदेशी उत्पादों का बहिष्कार करते हुए भारतीयों को स्वदेशी घरेलू उद्योगों में बने उत्पादों के उपयोग करने का आह्वान करता था। औद्योगिक विकास की गांधी जी की अवधारणा श्रमिक गहन छोटे पैमाने पर उद्योगों के विचार व विस्तार पर आधारित थी जिसमें खादी के उत्पाद को प्रमुख स्थान दिया गया था। इसलिए हथकरघा और बुनाई कांग्रेस बैनर के एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन कर उभरे।

इन रंगीन, स्टाइलिश और अभिव्यंजक कैलेंडरों का प्रभाव इतना गहरा था कि वे आक्रमणकारियों और विदेशी शासकों के खिलाफ राष्ट्रीय राय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल रहे क्योंकि इन विदेशी शासकों का एक मात्र मुद्धा भारत की बहुमूल्य संपत्ति, संस्कृति और राष्ट्रीय लोकाचार को लूटना व नष्ट करना था। भारतमाता व मदर इंड़िया की सम्पूर्ण छवि को देशभक्ति का मूलस्त्रोत माना जाने लगा जिसने हर वर्ग के अमीर व गरीब के ह्रदय को समान रूप से छु लिया। इस प्रकार ब्रिटिश शासकों के खिलाफ असहयोग आन्दोलन की भिष्म लहर का प्रसार हुआ। यहाँ इस सोच को बल मिलता है कि कला और संस्कृति के आधार पर चित्रित किए गए एक मुद्रित कैलेंडर जैसे सरल माध्यम से भी एक राष्ट्र आंदोलन को गति प्रदान करते हुए एक कैलेंडर क्रांतिकारी हथियार बन सकता है। इतिहास गवाह है कि इन भारतमाता के कैलेंडरों ने ब्रिटिश शासकों के ध्वज **'यूनीइन जैक'** को धूल चटा दी थी। भारतमाता की सची–सुची छवि को हमारा शत–शत प्रमाण।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. ***ओबेरॉय, पेट्रीसिया;*** *2006, फ्रीडम् एण्ड डेस्टिनी : जैन्डर, फ़ैमिली एण्ड पॉपुलर कल्चर इन इंडिया, ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ–49*

2. ***न्यूमेरर, एर्विन और स्केलबिगर, क्रिस्टिन ;*** *2003, पॉपुलर इंडियन आर्ट–राजा रवि वर्मा एण्ड द प्रिंटिड गॉडस ऑफ इंड़िया, ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ–1*

3. वही, पृष्ठ–56

4. वही, पृष्ठ–61

Mother Goddess from Indus Valle,

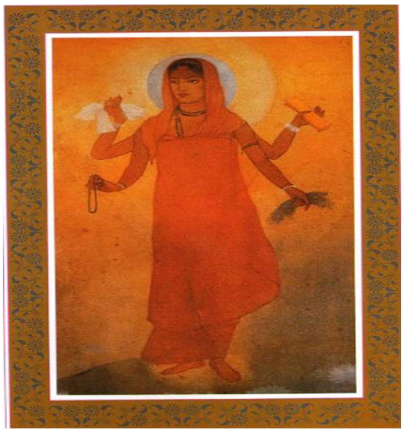

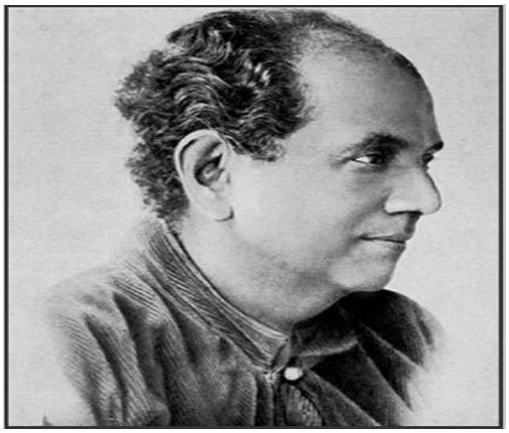

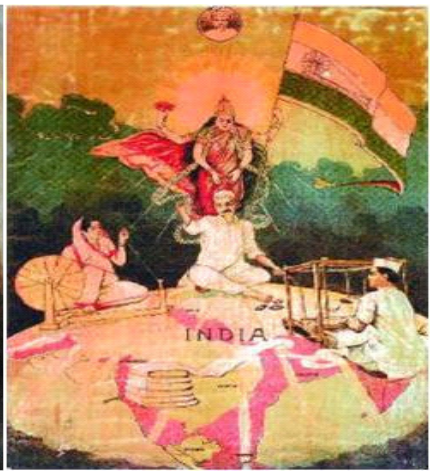
INDIA

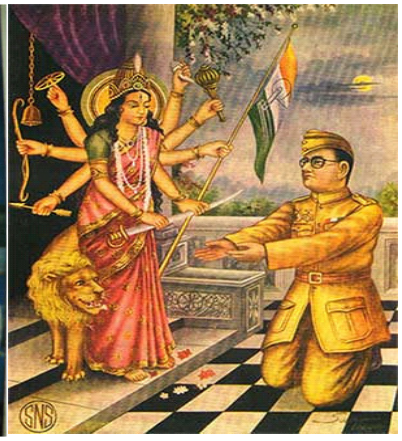
SNS

VANDE MATHARAM